Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

नागार्जुन की कविता में व्यक्ति- चेतना

शेख अजमद शेख आहेमद

नागार्जुन ने कई प्रकार की कविताएँ लिखी है | जिनमें प्रेमपरक , प्रकृतिपरक आस्था एवं सहानूभूति परक, संकल्प और मानवतावादी, उपदेशात्मक तथा व्यक्तिपरक आदि विषयों की कविताएँ समाविष्ट हो सकती है | इन विषयो में कवि कई प्रकार के चित्रण करता है | नागार्जुन के काव्य में प्रधान रुप से निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ मिलती है| १. शुध्द प्रकृति चित्रण २. धरती के प्रेम की कविताएँ ३. शृंगार परक कविताएँ ४. व्यक्तियों कों केंद्र में रखकर लिखी कविताएँ

इन विषयोंपर स्फुट रूप में अनेक कविताएँ मिलती है और सब विविध संकलनों में संकलित है | इन विषयों से हटकर नागार्जुन ने सामाजिक परिस्थितीयों को ध्यान में रखते हुए कुछ सामाजिक एवं राजनीतिक व्यक्तियों को आधार मानकर कविताएँ लिखी है | नागार्जुन की कविताओं में देशी - विदेशी व्यक्ति आये है | इनका विभाजन इस प्रकार है | १. राजनीतिक व्यक्ति २. कवि व्यक्ति ३. अन्य व्यक्ति

इनमें से राजनीतिक व्यक्तियों का चर्चा हम पहले कर चुके है | अन्य दो की चर्चा हमे अब करना है| जिन व्यक्तियों का लेकर उपर चर्चा की गई है वे १. तालाब की मछलियों २. तुमने कहा था ३. खिचडी विप्लव देखा हमने इन तीन संकलनों में आए हुये व्यक्ति है | इनके अलावा और भी व्यक्ति इन संकलनों में देखने को मिलते है | उन व्यक्तियों के बारे में हमें स्पष्टता न दिखाई देने के कारण हम उनपर विचार नही करेंगे या कर नही सके है | और कुछ कविताएँ ऐसी है जिनमें व्यक्ति का रुप स्पष्ट हुआ है इसलिए उन कविताओंपर भी विचार नहीं किया गया है | जैसा अगले पच्चास वर्ष और इस कविता में व्यक्ति के बारें में चित्रण आया है लेकिन किस व्यक्तिपर कविता लिखी है, यह स्पष्ट न होने के कारण इस कविता पर विचार नही किया गया है | इसी प्रकार की और भी कई कविताएँ हो सकती है जिनपर ध्यान नहीं दिया गया है |

धरती की तरह विशाल और आसमान की भाँति खुले बाबा नागार्जुन ने अपने संघर्ष भरे जीवन में झोपडियों , मजदूर – बस्तियों में बसे करोड़ों देशवासियों के दर्द को वाणी प्रदान की है। निराला जहाँ ' में अकेला ' कहते है वहीं नागार्जुन 'में न अकेला ' कहते हुए स्वयं को जनवाद से जोड़ते हैं। उनकी कविता विकासशील यथार्थ से जुड़ी है। इसलिए यथार्थ के किसी भी विकास को पकड़ने से वे नहीं चुकते उनके विशाल साहित्य में विविध विषयों के साथ अनगिनत व्यक्तियों पर भी कविताएँ है जो विविध काव्य संकलनों में बिखरी पड़ी है।

नागार्जुन ने सामाजिक परिस्थितियों को केंद्र में रखते हुए राजनैतिक , साहित्यिक आदि व्यक्तियों पर कविताएँ लिखी है। राजनीतिक नेताओं में उन्होंने सत्ताधारी दल के नेता , विरोधी दल के नेता तथा कुछ विदेशी नेताओं पर लिखा है। जहाँ कही राजनीति और जीवन प्रणाली में विरोध दिखाई देता है वहाँ वे व्यंग्य करते है। वे घटना विशेष को लेकर अपनी प्रतिक्रिया उस नेता के संदर्भ में व्यक्त करते हैं। गांधी को वे पिता- तुल्य समझते थे। उनकी मृत्यु पर वे क्षुब्ध हो उठे। आज उनके विचारों का स्वार्थ के लिए हो रहा उपयोग देखकर वे दुःखी होते है । वैसे ही मौन व्रत धारण किए विनोबा का वे विरोध करते हैं। तो दूसरी ओर नेहरू के समाजवादी और पूंजीवादी नीतियों से असंतुष्ट होते है। पर साथ ही उनकी सदिच्छाओं और कल्याणकारी कार्यों से भी प्रभावित हो उनका समर्थन करते है। उसी प्रकार से चाहे वह इंदिरा गांधी हो या मोरारजी देसाई अपनी स्पष्टवादिता से वह सभी को अपनी भूल गलतियों के लिए खरी - खोटी सुनाने से नहीं हिचकिचाते। वे केवल व्यंग्यवाण ही छोडना नहीं जानते अपितु जनता के हृदयसम्राटों के लिए श्रध्दा से उनका गौरव भी बढ़ाते है।

वास्तव में नागार्जुन अपनी कविताओं के माध्यम से जनता को केंद्रबिंदू मानकर उनका ही हितचिंतन करते हुए दिखाई देते हैं , क्योंकि वे स्वयं अपने को उनमें से ही एक मानते थे। कवि नागार्जुन अपने समकालीन अन्य कवियों का भी चित्रण करते हैं। उनमें से किसी के प्रति आदर था किसी प्रभाव के कारण प्रभावित हो कर या किसी की मृत्यु पश्चात ऐसी कविताएँ लिखी हैं। इसके साथ ही उन्होंने सामान्य व्यक्तियों पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं । जिनमें नागार्जुन ने स्वयं अनुभव किए व्यक्ति हैं। अत:नागार्जुन अपनी कविताओं में वेक्ति-चित्रण के द्वारा उनके व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्थिति का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इसमें वे निडर होकर अपनी 'दो - टूक' शब्दावली में स्पष्टवादिता को अभिव्यक्त करते हैं। नागार्जुन इसके द्वारा 'जन - कवि'के रूप में हमारे समक्ष उभरते हैं।